विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग संस्थान की एक अनुपम भेंट

अखण्ड भारत सन्देश

पाक्षिक

वर्ष 2 अंक 7 | विक्रम सम्वत् 2058 | शाके 1922 | आरोही द्वापरयुग का 303 वर्ष | १ फरवरी-१४ फरवरी,

अधर्म का अभ्युत्थान...अमरता का सृजन..

अखण्ड भारत सन्देश समाचार सेवा

माघमेला क्षेत्र में गंगा के पावन तट पर सेवारत क्रियायोग शिविर का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् तथा प्रोफेसर बलराम सिंह के द्वारा किया गया। प्रोफेसर बलराम सिंह चेयरमैन ऑफ साइंटिफिक रिसर्च बोंड यूनिवर्सिटी आफॅ मासाचुसेट्स तथा डायरेक्टर ऑफ सेन्टर फार इंडिक स्टडीज यूनिवर्सिटी आफॅ मासाचुसेट्स के पद् पर प्रतिष्ठित एक कुशल वैज्ञनिक हैं। क्रियायोग शिविर के उद्घाटन समारोह में अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् तथा प्रोफेसर बलराम सिंह ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम में उपस्थित जनसमुदाय तथा भारत, अमरीका व कनाडा से आये हुए साधकों व जिज्ञासुओं को संबोधित करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि आध्यात्मिकता हर चीज की प्रमुख जड़ है। अगर जड़ मजबूत है तो पौधा अपने आप हरा होगा। उसी प्रकार आध्यात्मिकता के ठीक होने पर समाज के अन्य अंग-शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार नीति, राजनीति आदि स्वत: ठीक हो जाएँगे। भारत में जब तक आध्यामिकता का सही रूप नहीं प्रकट होगा तब तक सामाजिक कुरूपताएँ बनी रहेगी। उन्होने आध्यात्मिकता के गलत स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि आज हर जगह पर कहा जाता है - 'धर्म की जय हो, अधर्म की हॉनि हो।' गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण ने कहा है -'जब-जब धर्म की ग्लानि होती है और अधर्म का अभ्युत्थान होता है तब-तब मैं आत्मा का सृजन करता हूँ।' आत्मा का गुण है अमरता । आत्मा के सृजन का अर्थ है अमरता का प्रकट होना। गीता में जिस धर्म - अधर्म की बात कही गयी है वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि धर्म नहीं है। जिस समय गीता लिखी गयी थी उस समय हिन्दू, मुस्लिम आदि धर्म नहीं था। गीता शरीर क्षेत्र का विज्ञान है। गीता में शरीर के अंदर विद्यमान इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकार आदि तत्वों के धर्म की बात कही गयी है। यहाँ धर्म का अभिप्राय किसी भी चीज की मौलिक प्रकृति, गुण धर्म (Properties) से है। मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि हर चीज को अच्छे और बुरे के रूप में देखती हैं। इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि का धर्म है द्वन्द। धर्म की ग्लानि का अर्थ है इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि की द्वन्दात्मक

– शेष पृष्ठ 2 पर

माघमेले में क्रियायोग शिविर का उद्घाटन करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् तथा प्रोफेसर श्री बलराम सिंह

आध्यात्मिकता हर चीज की प्रमुख जड़ है। अगर जड़ मजबूत है तो पौधा अपने आप हरा होगा। उसी प्रकार आध्यात्मिकता के ठीक होने पर समाज के अन्य अंग-शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार नीति, राजनीति आदि स्वतः ठीक हो जाएंगे। भारत में जब तक आध्यामिकता का सही रूप नहीं प्रकट होगा तब तक सामाजिक कुरूपताएं बनी रहेगी।

गणतंत्र का सनातन स्वरूप

गणतंत्र शब्द 'गण' और 'तंत्र' शब्द से बना है। 'गण' का अभिप्राय समूह से है तथा 'तंत्र' का अभिप्राय व्यवस्था से है। ऐसा तंत्र जिससे समस्त मानव समूह (गण) एक साथ रह सके, गणतंत्र पर्व है। क्रियायोग का अभ्यास करने से मानव-मानव के बीच ऐसी एकता स्थापित होती है कि सभी लोग एक सूत्र में बँध जाते हैं। अत: क्रियायोग का अभ्यास करना वास्तविक गणतंत्र दिवस को मनाना है।

26 जनवरी को हमारे देश में नया संविधान लागू हुआ था भारत राष्ट्र में सच्ची सुख-शान्ति की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि हमारे देश का संविधान, शिक्षा नीति, व्यापार नीति, चिकित्सा, राजनीति आदि से सम्बन्धित नियम, कानून इस प्रकार बदलें कि वो पूर्णतया व्यवहारिक हो। इसके साथ ही साथ यह भी सुनिश्चित हो कि उन नीतियों पर चलने से राष्ट्र की सम्पूर्ण समस्याएँ दूर होंगी।

— शेष पृष्ठ 15 पर

4 महात्मा गाँधी की तरह कैसे बनें?

11 दूध का सेवन हॉनिकारक क्यों?

12 संग्रह प्रवृत्ति के समापन से राष्ट्र का उत्थान

9 University of Massachusetts Dartmouth

– पृष्ठ 1 का शेष

गणतंत्र का सनातन स्वरूप

गणतंत्र दिवस के अवसर पर पूज्य गुरुदेव के द्वारा व्यक्त विचार का संक्षिप्त अंश - योगमाता

प्रकृति को समाप्त करके अद्वैत भाव को प्रकट करना। अद्वैत में स्थित होने पर मनुष्य इन्द्रियातीत अवस्था की प्राप्ति कर लेता है। इन्द्रियातीत अवस्था को शास्त्रों मे वेदातीत अवस्था कहा गया है और इसी को अधर्म भी कहते हैं। क्रियायोग के अभ्यास से मनुष्य द्वन्द से उपर उठकर अद्वैत में स्थित हो जाता है। ऐसी अवस्था में मनुष्य अमरता की अनुभूति आजादी के बाद 26 जनवरी को हमारे देश में नया संविधान लागू हुआ था। जनमानस के अंदर यह धारणा थी कि हम स्वतंत्र हो गए हैं। अत: हम अपने स्वयं के नियम, कानून बनाएँगे और उनका पालन करेंगे। राष्ट्र में सच्ची सुख-शांति और व्यवस्था के लिए यह आवश्यक है कि हमारे देश का संविधान, न्याय व्यवस्था, शिक्षा नीति, राजनीति, सामाजिक नीति तथा अन्य सारे नियम, कानून संबंधित व्यवस्थाएँ इस प्रकार बदलें कि जनता उस पर आसानी से चल सके। इसके साथ ही साथ उन नियमों पर चलने से हमारे देश की गरीबी, सामाजिक अव्यवस्थाएँ और कुरीतियाँ समाप्त हो। संविधान के वे नियम जो अव्यवहारिक हैं और जिन पर चलने से राष्ट्र की समस्याएँ न दूर हों, राष्ट्रीयता के विपरीत हैं।

देश का मालिक कैसा होना चाहिए?

घर का मालिक कभी भी वोट देकर या किताब पढ़कर नहीं बनाया जा सकता है। अगर घर में वोट देकर मालिक बनाया जाय या इस आधार पर मालिक बनाया जाय कि जो जितनी ज्यादा किताबों को पढ़कर रट लेगा वो मालिक बनेगा, तो मालिक की सुरक्षा का खतरा रहेगा। आज देश का मालिक वोट देकर चुना जाता है इसलिए नेता, मंत्रीगण आदि के साथ उनकी सुरक्षा के लिए सुरक्षाकर्मी लगे रहते हैं। सारे नेता मंत्रीगण जो जनता की सेवा के लिए नियुक्त होते हैं, ब्लैक कमांडो के घेरे में चलते हैं। आज जो जितनी ज्यादा किताब पढ़कर, याद कर लेता है उसे जनता की सेवा के लिए उतना बड़ा पद मिलता है। यह नीति पूर्णतया गलत है। देश का मालिक कैसा होना चाहिए? इसको समझने के लिए कल्पना करें... घर का मालिक कैसा होना चाहिए? घर का मालिक वही हो सकता है जो घर में सबको प्रेम करने की क्षमता रखता हो, जो स्वयं सबसे कम सुविधाओं में रहे और परिश्रमी हो। इसी प्रकार देश का मालिक उसे होना चाहिए जो देश में सबको प्रेम करने की सामर्थ्य रखें। पहले दूसरे की सुख-सुविधाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति करे फिर अपनी सुविधाओं और आवश्यकताओं पर ध्यान दे। आज ऐसा नहीं है। इसी प्रकार आज जिले का मालिक जिले की सारी सुख-सुविधा को अपने पास रखता है। बाकी लोगों की क्या स्थिति है, इस पर उसका ध्यान नहीं जाता है। इसका प्रमुख कारण है शिक्षा नीति ठीक नहीं है।

अगर देश में उस व्यक्ति को मालिक बनाया जो सर्वाधिक परिश्रमी हो, सुविधा भोगी न हो, सबको प्रेम करने की सामर्थ्य रखता हो और न्यूनतम आवश्यकताओं में जीवन व्यतीत करता हो तो राष्ट्र की सम्पूर्ण समस्याएँ स्वत: समाप्त हो जायेंगी।

स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ

26 जनवरी के दिन झण्डारोहण होता है। झण्डारोहण हमारी स्वतंत्रता का परिचय देता है। हम सभी एक दूसरे से जुड़े हैं और किसी से अलग नहीं हो सकते हैं। ऐसा अनुभव करना ही वास्तविक स्वतंत्रता की अनुभूति करना है। किसी से अलग होने का विचार बनाना, स्वतंत्रता के विपरीत है। हर व्यक्ति ईश्वर से जुड़ना चाहता है।

ईश्वर में सब कुछ विद्यमान है। ईश्वर से जुड़ने का अर्थ है सब कुछ से जुड़ना। वस्तुत: हम सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। क्रियायोग का अभ्यास करने पर यह दृष्टि प्रकट होती है कि हम किसी से अलग नहीं हैं। हम सभी एक दूसरे से सनातन काल से जुड़े हुए हैं।

Kriyayoga Mela Camp 2003 Inauguration

As Understood Based On Teachings of Guruji Swami Shree Yogi Satyam @ Magh Mela Camp **- Meeramata**

Inaugurating the spread of Kriyayoga - Wisdom to bring about truth, real peace and non-violence in society...

Kriyayoga Research Institute held an inauguration for Kriyayoga Mela Camp 2003 on Triveni Road at the Mela camp on January 22nd in the afternoon. Opening the session, Kriyayoga Scientist, Swami Shree Yogi Satyam introduced chief guest, Professor Bal Ram Singh, renowned Scientist and Director of The Center of Indic Studies of The University of Massachusetts, Dartmouth. Professor Singh lit the inauguration lamp to symbolize the spread of Kriyayoga - Wisdom to bring about truth, real peace and non-violence in society.

Amidst the local and foreign Kriyayoga practitioners from North America, Swami Shree Yogi Satyam said that in North America, professors are most highly regarded and due to their deep understanding and knowledge of their field of expertise, they are approached by the leaders of the nation to give advice and opinion on issues affecting the nation. This, however, is not the case in India and should change for the development of Mother India.

Swamiji further said that to solve all problems - individual, social, national and international, real spirituality has to be practiced. Swamiji explained that spirituality is the foundation of everything. Just as a plant grows healthy and strong when its roots are healthy, likewise , all systems of society will be proper and effective when spirituality is practiced correctly.

Elaborating on how spirituality has been misinterpreted and malpracticed in India, Swamiji highlighted the example of the chanting of the phrase - *Dharm ki jai ho, Adharm ka naash ho...* (Victory to *Dharma*, Defeat to *Adharma*) Swamiji said that this chanting is the complete opposite of what has been stated in The Gita. In The Gita, Prophet Krishna highlighted that "Whenever there will be decline of *dharma* and expansion of *adharma*, one gains true knowledge of the soul…". To gain real knowledge of the soul means to know the nature of the soul as being immortal.

Defining *Dharma*, Swamiji said that *Dharma* is commonly misinterpreted and used to refer to the different religious groups of Hindus, Muslims, Sikhs, Christians and others. Swamiji explained that during the time that The Gita was written, these religious groups did not even exist and they came about due to differences amongst persons. Swamiji said that the real meaning of *dharma* is 'nature of'. The Gita is the science of our body field and *dharma* that is referred to in The Gita describes the nature of the elements of our senses, mind and

... continued next page

continued....

Mela 2003 Inauguration News

wisdom. Due to the blindness of our mind, our senses perceive duality. We tend to classify any vision, sound, taste, smell and touch perception as being good or bad and that is the cause of all problems in our life. Swamiji highlighted that we have to go beyond the *dharma* of our senses that perceive duality and establish singularity in our lives. As this happens, we will realize our immortal nature and be able to solve all problems in life. Swamiji said that to attain the state of singularity in life, we have to practice the science of Kriyayoga.

Swamiji said that Kriyayoga is the original scientific technique that was practiced by the ancient rishis of India. Kriyayoga brings about fast evolution of the mind and awakens the wisdom within. Swamiji explained that as the blind mind is awakened within, traditions that in reality serve no value in society are automatically replaced by traditions that are constructive for the society. Swamji elaborated that by practicing Kriyayoga, our understanding increases and we follow the path of non-violence in life. In this way, the spread of Kriyayoga is most essential for humanity. As well, with the practice of Kriyayoga, one establishes unshakeable faith.

Following Swamiji's address, Professor Singh addressed the mela crowd and introduced The Center of Indic Studies and the course of Kriyayoga being offered at The University of Massachusetts. Professor Singh said that The Center Of Indic Studies had been opened for the purpose of projecting Indian culture and practices in the correct fashion outside of India. Professor Singh further said that as part of The Center's effort to spread the true Indian wisdom, it offers the course of Kriyayoga to the students of the university. Professor Singh said that the practice of Kriyayoga has proven to remove all illness, tension and worry in life. Kriyayoga will also bring about real peace and unity in the world.

"Whenever there will be decline of *dharma* and expansion of *adharma*, one gains true knowledge of the soul…" To gain real knowledge of the soul means to know the nature of the soul as being immortal. Swamiji said that the real meaning of *dharma* is 'nature of'. The Gita is the science of our body field and *dharma* that is referred to in The Gita describes the nature of our senses, mind and wisdom that are elements of our body field. Due to the blindness of our mind, our senses perceive duality. We tend to classify any vision, sound, taste, smell and touch perception as being good or bad and that is the cause of all problems in our life. Swamiji highlighted that we have to go beyond the nature of our senses that perceive duality (*dharma*) and establish singularity (*adharma*) in our lives. As this happens, we will realize our immortal nature and be able to solve all problems in life. Swamiji said that to attain the state of singularity in life, we have to practice the science of Kriyayoga.